National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(65): 74-76
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

अर्पिता शुक्ला
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी

डॉ अचला पांडेय
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग,
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी

.

Correspondence:
अर्पिता शुक्ला
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी

'रेडियो कोसी' उपन्यास में वर्णित बाढ़ प्रभावित जनजीवन

अर्पिता शुक्ला , डॉ अचला पांडेय

'रेडियो कोसी' उपन्यास में प्रह्लाद और दीपा की कहानी के माध्यम से कोसी नदी के तटबन्ध के भीतर फंसे गाँव एवं बाढ़ प्रभावित लोगों की स्थिति के बारे में अवगत कराया गया है। अपने प्रेम-प्रसंग के दिनों के दौरान प्रहलाद, दीपा के लिए रेडियो की एक तरंग बनाता है, जो आगे चलकर कोसी नदी के किनारे बसे गांवों का समाचार एवं मनोरंजन का साधन बनता है तथा बाढ़ के आने की सूचना देकर लाखो लोगों की जान बचाता है। ऐसे महत्त्वपूर्ण रेडियो को बंद करवाने के लिए राजनीतिक नेता एवं पुलिस अपना पुर-जोर कोशिश करते हैं और अंत में बंद करवाने में सफल भी होते हैं। जो इस बात का सन्देश देता है कि देश की राजनीतिक सत्ता अपने सगे संबंधियों का भला करने के लिए कुछ भी कर सकती है। उसे आम-जन के सुख- दुःख से किसी भी प्रकार का सरोकार नहीं है।

रेडियो कोसी उपन्यास जो 6 क्रमों में विभक्त है, अपने में **अतिमापरकयाथार्थ** (इस सत्य को बदला नहीं जा सकता उदाहरण:- सूर्य पूर्व से उगता है, पश्चिम में अस्त होता है) को समाहित किए हुए है। कोसी नदी में बाढ़ आना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है क्योंकि वह अपने साथ गाद लाती है। गाद की मात्रा इतनी अत्यधिक होती है कि उसे अपना रास्ता बदलना ही पड़ता है- ***"कोसी नदी के इस व्यवहार के पीछे इस नदी द्वारा लाए गए सिल्ट की अधिकतम बताई जाती है। इस नदी में मौजूद सिल्ट की मात्रा के बारे में एक ब्रिटिश वैज्ञानिक एफसी हर्स्ट ने 1908 में कहा था : "कोसी नदी हर साल लगभग 5 करोड़ 50 लाख टन गाद लाती है और मेरा अनुमान है कि इसमें से 3.7 करोड़ टन गाद वह अपने आस-पास के इलाके में डाल देती है। 3.7 करोड़ टन गाद का मतलब, लगभग 1.96 लाख घनमीटर होता है।"***[1]

इसी कारण जो नदी आज से 150 साल पहले 100 किलोमीटर पूर्व में बहा करती थी अब वह प्रत्येक 20- 25 वर्ष में पश्चिम की ओर खिसकती जा रही है। इस प्रक्रिया में कोसी नदी बाढ़ रुपी भारी तबाही के साथ-साथ बहुत सारी बीमारियां भी साथ लाती है। ***"हर वर्ष इतनी मात्रा में गाद लाने के कारण नदी की पेटी बहुत जल्द ऊँची हो जाती थी और मजबूरन उसे अपना रास्ता बदलकर निचले इलाके में बहने के लिए मजबूर होना पड़ता था। बहरहाल नदी के इस स्वभाव के कारण स्थानीय लोगों को भारी तबाही का सामना करना पड़ता था। इसके अलावा सालों-साल आनेवाली बाढ़ और इसके कारण फैलनेवाली हैजा, मलेरिया और कालाजार जैसी बीमारियाँ अलग थीं।"*** [2]

उपन्यास में बाढ़ के दो और कारणों को बताया गया है; प्रथम नदी के चंचल स्वभाव के कारण अपना रास्ता बदलना। द्वितीय सरकार द्वारा नदी को बांधने के लिए बाँध बनाया जाना और नदी का बांध तोड़कर बाहर निकल जाना। ये दोनों ही कारण मिलकर भयंकर जन-धन हानि का कारण बनती है। जब अनिरुद्ध 2008 में कोसी बाढ़ पर रिपोर्टिंग करने आते हैं तब उन्हें बाढ़ का वास्तविक कारण पता चलता है कि

*"इस बार विद्रोहिणी कोसी ने सरकार बहादुर के बनाए तटबन्ध को तोड़ दिया है और पूरी की पूरी नदी अपने पुराने रास्ते को छोड़कर नये इलाके में बहने लगी है। वह नया इलाका जहाँ बस्तियाँ हैं, खेत हैं, और लोग-बाग रह रहे हैं। अचानक लाखों लोगों ने पाया कि उनके घर के आस-पास से एक भरी-पूरी नदी बहने लगी है। वह उनके मकानों के अस्थि-पंजर को हिला रही है। यह बाढ़ नहीं थी, यह कोसी नदी की बगावत थी। **54** साल तक सरकार ने उसे तटबन्धों के पिंजरे में कैद कर रखा था, अब इस नदी ने पिंजरा तोड़ दिया था। इस इलाके के पाँच जिलों पर इस तबाही का असर दिखा। **993** गाँव इस नई धारा के आगोश में डूब गए। लाखों लोगों को बेघर होना पड़ा। दहशत इतनी थी कि जो उस तबाही के बीच से निकला, उसने कोसी का इलाका ही छोड़ दिया।"*[3]

रिपोर्टर अनिरुद्ध की मां अचानक आई बाढ़ के बारे में अनिरुद्ध को फोन पर बताती हैं *-"रे बाबू, लगता है, प्रलय आ गया। चारों तरफ इतना पानी है कि बुझाता है, हम लोगों का घर समुद्र के बीच में हेल रहा है। कुछ करो।"*[4] यह वाक्य बाढ़ के समय में लोगों की मानसिक स्थिति से परिचित करता है कि ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति कितना डर जाता है। जीवन भर की पूंजी एक झटके में प्रलय के कारण समाप्त हो जाती है। अपना वह स्थान, अपने लोग, व्यक्ति को न चाहते हुए भी छोड़ने पड़ जाते हैं। उपन्यास का पात्र **सुलेमान** भी इसी मानसिक पीड़ा का शिकार है। उसका गांव महासेतु बनने के कारण डूब गया था और वहां तबाही के मंजर के अलावा कुछ भी शेष नहीं रह गया था फिर भी वह अपने घर को देखने जाता है। *"दीपा सुलेमान को टुकुर-टुकुर देख रही है, समझने की कोशिश कर रही है कि एक आदमी अपने डूब चुके गाँव को देखने जा रहा है। वहाँ उसे कुछ भी हासिल नहीं होगा। मगर वह गाँव को देखकर। घर की दीवारों, दूसरी इमारतों, कुओं, बगीचों को छूकर, वहाँ टहलकर लौट आएगा। वह उस दुनिया में फिर से घुसने की कोशिश करेगा जहाँ उसकी बचपन की यादें बसी हैं।"*[5]

ऐसे बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को मजबूरन विस्थापन की पीड़ा को झेलना पड़ता है। अपने जगह से, अपने लोगों से पूरी तरह बिछड़ कर एक ऐसी अनजान जगह रहना पड़ता है जिसके बारे में वे अपरिचित हैं और उन्हें यह भी पता नहीं कि वे उसे स्थान पर कब तक रुक सकेंगे। *"एक तो इस बात का ठिकाना नहीं था कि यहाँ से उजड़े तो कहाँ बसेंगे, कितने दिन बसेंगे। और वह कैसा ठिकाना होगा! क्या वहाँ इन चीजों को रखने की इजाजत होगी? दूसरी बात यह कि गाँठ में जितना पैसा था, उसे बचाकर रखना चाहते थे, ताकि आनेवाली मुश्किलों का सामना किया जा सके।"*[6] प्रहलाद रिपोर्टर अनिरुद्ध को बताता है कि हमारे गांव में 12-13 वर्ष की उम्र में बच्चों को बाहर काम पर भेज दिया जाता है ताकि प्रत्येक वर्ष की इस बाढ़ में उसका जीवन नष्ट न हो। प्रहलाद को भी 15 वर्ष की उम्र में बाढ़ की स्थिति में अपना घर छोड़ना पड़ा था।

बालकुंडा गांव के वासी भी विस्थापन की पीड़ा से जूझ रहे हैं। प्रहलाद और दीपा जब प्रहलाद के चाचा-चाची के यहां बालकुंडा गाँव जाते हैं तो प्रह्लाद देखता है कि *"वह गाँव नहीं था। पता चला कि सालों पहले बलकुंडा गाँव कोसी की धार में डूब गया था। गाँव के लोग कई साल से एक नहर के किनारे-किनारे झोंपड़ी बनाकर रहते थे। वही उनका बलकुंडा गाँव था। एक-एक परिवार को बमुश्किल आधा से एक डिसमिल जमीन बसने के लिए मिली थी। एक-दो कमरे थे। जब दिन होता, मौसम ठीक होता तो लोग बाहर में बने मचान पर या जमीन पर बैठे रहते। कोठरी सिर्फ सोने और जरूरी सामान रखने के काम आता था।"*[7] इस पर चाची दीपा को बताती है कि कैसे बाढ़ के कारण खेत, उनके घर-द्वार, पूरा गांव बेघर हो गया है। उनके पास न रोजी-रोटी कमाने के लिए जमीन बची है और न ही संचित धनराशि, जो वे लोग धनतेरस पर सोना खरीद कर उसे भविष्य में काम आने के लिए सुरक्षित रखते थे किंतु कोसी नदी की बाढ़ ने सब तबाह कर दिया और उन्हें नहर के किनारे शरण लेनी पड़ी। *"मगर उस साल जाना ही पड़ा। उस साल गजब पानी आया था कोसी में। खेत-पथार, घर-दुआर सब डूब गया। दू महीना बाँध पर जाकर रहना पड़ा था। वही बाँध जिसे अनिरुद्ध भाय तटबन्ध कहते हैं। पहले माय की साड़ी टाँगकर झोंपड़ी बनाए थे, फिर न जाने कहाँ से एगो संस्था वाला आया और तिरपाल देकर गया। रहने का तो हो गया, मगर खाने-पीने का कोई इन्तजाम नहीं। घर में जो अनाज था, ऊ पहले ही डूब भसिया गया था।"*[8]

बाढ़ के कारण बिहार की ये इलाके आज के समय से बहुत पीछे चल रहे हैं यहां आज भी बिजली की व्यवस्था नहीं है, घर मिट्टी के बने हुए हैं। दीपा जब पहली बार प्रह्लाद के गांव आती है तो वह देखती है*-"पहली बार जब इस गाँव को देखा था तो मेरी हिम्मत डगमगा गई थी। आज तक मिट्टी के घर में नहीं रही, बिजली का कोई नामोनिशान नहीं। फर्श से लेकर आँगन तक हर जगह मिट्टी। कहीं आने-जाने की कोई राह नहीं। बारिश में घर टपकने लगता तो गरमियों में रात भर पंखा झलते हुए जागना पड़ता।"*[9]

औरतों की स्थिति और भी खराब है, यहां के लोग महिलाओं के प्रति रूढ़िवादी विचारधारा से ग्रसित हैं। आधुनिकता एवं समानता का भाव इन गांवों से कोसों दूर है। *"गाँव में औरतों के लिए दस तरह के झमेले हैं। घूँघट में रहना है, घर का काम-काज तो करना ही है, साथ*

में खेती-मजदूरी भी करना है। बुजुर्गों के सामने बिना घूँघट के नहीं जाना है। घर से बाहर अकेले जाने में सौ झमेले। बीमारी हुई तो और झमेला। शौच करना है तो अँधेरा होने का इन्तजार कीजिए। गाँव में कोई मीटिंग हुई तो वहाँ खाली मरद ही रहेंगे। औरतें गईं भी तो चुपचाप बैठी रहेंगी। आपस में फुसफुसाएँगी मगर बोलेंगी कुछ नहीं।" [10] अस्पतालों की स्थिति भी खराब है जिसके कारण औरतों और उनके बच्चों की मौत होती रहती है। दुखना की मामी, दीपा को गांव में होने वाली डिलीवरी के बारे में बताती है। ***"यह सब यहाँ आम बात है। हर साल किसी-न-किसी औरत की जान चली जाती है। बच्चा तो कितना मरता है, इसका कोई ठिकाना नहीं है। कोई ऐसी जनानी नहीं है जिसका बच्चा नहीं मरा हो। कई जनानी तो ऐसी हैं, जिनका चार-चार, पाँच-पाँच बच्चा मर गया। मगर किसको परवाह है। जो बच जाता है, अपने को भागमन्त समझता है।"*** [11]

इसका कारण उपन्यासकार बताते हैं कि ऐसी परिस्थिति के बने रहने में केवल गांव वालों की गलती नहीं है बल्कि और भी वजह हैं जिसके कारण ये इलाके इतने पीछे और रूढ़िग्रस्त हैं **-** ***"गरीबी, अशिक्षा और सड़क से नहीं जुड़ा होना, ऐसी वजहें थीं कि यहाँ एंबुलेंस का आना मुश्किल था। लोग सदियों से इसी तरह जीते आ रहे थे, इसलिए उन्हें यही ठीक लगता था। औरतें या बच्चे मर जाते थे तो लोग समझते थे, ऊपर वाले की यही मरजी है। यह नहीं सोचते कि दुनिया बदल रही है और अब ऐसी परेशानियों का बहुत आसान इलाज है।"*** [12] इसीलिए प्रहलाद दीपा को अपने गांव की स्थिति के बारे में बताते हुए कहता है ***"यह जगह रहने के लिए दुनिया में सबसे बुरी जगह है मैडम।"*** [13]

ऐसी बाढ़ प्रभावित विषम परिस्थितियों के बाद भी वहां की जनता कोसी को अपनी माँ समान मानती है, वे लोग उसे **'कोसी मैया'** कहते हैं क्योंकि वह जानते हैं कि वह उन्हें जीने का सहारा भी प्रदान करती है। ***"दुहाय कोसी माय, तोहीं रच्छा करिहें..."*** [14] इन परिस्थितियों के बावजूद भी बाढ़ प्रभावित यह लोग अपने इलाकों को नहीं छोड़ते हैं। सरकार के अनुसार वे इन बाढ़ प्रभावित लोगों को जमीन के बदले सुरक्षित जमीन भी देते हैं और खेत भी फिर भी यह लोग सरकार द्वारा दी गई जमीन स्वीकार न करके, पुरानी जमीन पर रहना ही पसंद करते हैं। इसका कारण भी पुष्यमित्र बताते हैं- ***"जब पुनर्वास की बारी आई तो सरकार ने बड़ा ही रोचक समाधान तैयार किया। इसके मुताबिक तटबन्ध के अन्दर जो जमीन है, वहाँ बाढ़ की समस्या साल में सिर्फ तीन महीने रहेगी, यानी वहाँ की जमीन पर खेती करने में कोई परेशानी नहीं।.....इसके बाद आनेवाले समय में लोगों की समझ में आया कि अगर खेत घर से पाँच किलोमीटर की दूरी पर भी हो तो खेती करना और फसल की रक्षा कर पाना बहुत कठिन व्यवसाय साबित होता है।"*** [15]

ऐसे कठिन हालात में भी लोग हार नहीं मानते, बल्कि आपसी सहयोग, साहस और सामुदायिक भावना के सहारे जीवन को आगे बढ़ाते हैं। इस बाढ़ के अभ्यस्त लोग अपने मकानों की रचना इस भांति करते हैं कि कम स्तरीय बाढ़ की स्थिति में उनके घर डूबे नहीं। ***"दुआर सड़क से कम-से-कम पाँच फीट ऊँचा जरूर रहा होगा। आस-पास के दूसरे घरों की भी यही कहानी थी। लोग सीढ़ियों से उतरकर सड़क पर आते थे। हर साल आनेवाली बाढ़ से बचने के लिए लोगों ने घरों को ऊँचा करवा लिया होगा। इस तरह बाढ़ का पानी घर तक आसानी से नहीं पहुँचता होगा, रास्ते से बहकर निकल जाता होगा।"*** [16]

अतः 'रेडियो कोसी' उपन्यास अपने यथार्थ रूप में संपूर्ण सत्य को समाहित किए हुए है। यह न सिर्फ बाढ़ की विभीषिका को दर्शाता है बल्कि उससे प्रभावित जनजीवन का मार्मिक पक्ष भी प्रस्तुत करता है और स्पष्ट शब्दों में ऐसी सत्ता का विरोध करता है जिसे आमजन के सुख-दु:ख से कुछ भी लेना देना नहीं है। इसलिए हम कह सकते हैं कि उपन्यासकार पुष्यमित्र अपनी इस औपन्यासिक कृति में बाढ़ प्रभावित जनजीवन को प्रदर्शित करने में पूर्णत: सफल हुए हैं।

संदर्भ –

1. पुष्यमित्र, रेडियो कोसी, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण: 2022, पृष्ठ संख्या- 149
2. वही, पृष्ठ संख्या- 149
3. वही, पृष्ठ संख्या- 11
4. वही, पृष्ठ संख्या- 11
5. वही, पृष्ठ संख्या- 110
6. वही, पृष्ठ संख्या- 112
7. वही, पृष्ठ संख्या- 82
8. वही, पृष्ठ संख्या- 24
9. वही, पृष्ठ संख्या- 61
10. वही, पृष्ठ संख्या- 95-96
11. वही, पृष्ठ संख्या- 100
12. वही, पृष्ठ संख्या- 101
13. वही, पृष्ठ संख्या- 33
14. वही, पृष्ठ संख्या- 118
15. वही, पृष्ठ संख्या- 151
16. वही, पृष्ठ संख्या- 14